एनजीओज़ का कुरूप श्रृंगार : नरक मसीहा के आईने में

रुमैसा नज़ीर

उपन्यास मानव जीवन की व्यथा को दर्शाता है,यह कथन तो प्रत्येक उपन्यास पढने वाले की जुबान पर है पर किस प्रकार की व्यथा को दर्शाता है – असफल प्रेम, दाम्पत्य जीवन की समस्या , अनमेल विवाह या विवाहोत्तर संबंध? यह तो दिन प्रति दिन की समस्याएँ एवं घटनायें है परन्तु इस से बढकर कुछ और भी है जो हमारे समाज को अन्दर ही अन्दर खोखला कर रहा है , हमारे गरीब ,बेरोजगार वर्ग को आगे बढने के बजाए पीछे ही धकेलता चला जा रहा है परन्तु वह क्या है? इस प्रश्न का उत्तर ढूँढने का बेडा यदि कोई उठा पाया तो वह है भगवानदास मोरवाल जिन्होंने सन् २००९ में अपनी पड़ताल प्रारम्भ की और पांच वर्ष के पश्चात यानि २०१४ में अंततः इसका उत्तर ढूंढने में उन्हें सफ़लता प्राप्त हुई, जिसका परिणाम आज हमारे समक्ष एक उपन्यास के रूप में प्रस्तुत है अर्थात् 'नरक मसीहा' | यदि नरक मसीहा का शाब्दिक अर्थ देखें तो नरक का अर्थ होता है 'यमलोक' और मसीहा यानि 'अभिषिक्ता', 'शासक' तथा 'प्रभु' |

भगवानदास मोरवाल के अनुसार "पाप करते हुए मसीहा माने जानेवाले ये स्वार्थी देश में फल –फूल रहे हैं | इन मसीहाओं में स्वार्थ है, पैसा कमाने के अपने –अपने तर्क हैं, मार्ग है, कुमार्ग है, भ्रष्टाचार है, स्वछंदता है | यह एनजीओज की दुनिया सचमुच का नरक है , जिस नरक के ये मसीहा बन बैठे हैं |"

'नरक मसीहा' उपन्यास में उत्तर शती में पनपती गई एनजीओ संस्कृति को विषय बनाकर इनका टेबल के नीचे से अर्थात जायज़ तरीके से कमाए गये पैसों, इज़्ज़त आदि का पर्दाफ़ाश किया गया है | 'नरक मसीहा' एनजीओ का धंधा चलाने वाले इन लोगों को नंगा करता

है जो समाज कल्याण के नाम पर अपने घरों का कल्याण करते है, गरीब एवं असहाय लोगों को निशाना बनाकर उनकी भावनाओं के साथ आँख-मिचोली खेलते हैं-कभी मिर्ची पाउडर तो कभी मामूली सी साडी की लालच दे कर पैसे निकालने वाले यही लोग देश की उन्नति में सबसे बड़ी बाधा के रूप में हमारे समक्ष प्रस्तुत होती है |

गैर सरकारी संगठन अर्थात NGO's भारत में कुछ वर्षों से तीव्र गति से बढती जा रही है हालांकि सरकार द्वारा कुछ साल पहले बहुत सी ऐसी संघठनों को बंद भी कर दिया था जिनके पंजीकरण पर सरकार को संदेह था पर लोग तो रातों-रात तरक्की करना चाहते हैं | एक NGO बंद हुआ तो क्या हुआ दूसरा खोल दिया वह भी पंजीकरण करने वाले अफसर को तगड़ी मिठाई खिलाकर | आप मानो या ना मानो यही इस देश की वास्तविकता है |

इस उपन्यास में चित्रित इसी NGO की गाथा को अभिव्यक्ति प्रधान की गयी है जिसमें दो तरह के गांधीवादी विचारधारा के लोगों को दर्शाया गया है एक इसकी मुख्य पात्र या कहे कि इस उपन्यास की मुख्य दलाल बहन भाग्यवती है जो गैर सरकारी संगठन का समूह चलाती है और साथ ही वह बाल एवं महिला कल्याण परिषद् की अध्यक्ष भी है जो केवल नाम मात्र के लिए गांधीवादी है, वह सिर्फ अपने फायदे के लिए गांधीजी के असूलों को इस्तेमाल करती है और दूसरी तरफ आचार्य गंगाधर जी है जो एक आदर्शवादी व्यक्ति है वह अपनी संस्था 'सर्वोदय कल्याण सभा' चलाते है साथ ही बहन भाग्यवती के सहपाठी भी है परन्तु वह सेवावृति के रूप में गांधीजी के मिशन को चलाते है | उनके लिए गांधीजी मार्गदर्शक हैं, वह अपने जीवन को लोगों के प्रति समर्पित करने में विश्वास रखते हैं, साथ ही जनकल्याण में अपना योगदान देते हैं | बहन भाग्यवती आचार्य गंगाधर जी की

संस्था का नाम बदलना चाहती है क्योंकि उन्हें लगता है कि सभा की जगह यदि आश्रम रखा जाए तो उसमें गांधी जी का पूरा चिंतन समाया हुआ लगेगा और फिर बाद में सभा और आश्रम के स्थान पर ट्रस्ट या फाउंडेशन रखना चाहती है क्योंकि उन्हें लगता है कि इससे विदेशी अनुदान मिलना सुलभ हो जायेगा |इस प्रसंग से ही ज्ञात होता है कि जिस गांधीजी को भारत देश में एक आदर्श रूप, पथ-प्रदर्शक, आदि के रूप में समझा जाता है, वहीँ भाग्यवती जैसे लोभी लोग उनके नाम का दुरूपयोग केवल धन एंठने के लिए करते हैं |उनकी नज़र में वर्त्तमान समय में जहाँ लोगों को एक-दूसरे से आगे जाने की होड़ लगी है वही गांधीजी का मोल ही समाप्त होता दिख रहा है |वह केवल दफ्तरों में टंगी तस्वीरों में ही अच्छे लगते हैं |भाग्यवती समाज की कडवी सच्चाई से पर्दा उठाती हैं कि-"आचार्यजी, बापू या गांधी का हमने बहुत तेल निकाल लिया |इनके नाम पर लोगों को बहुत ठग लिया |बहुत खा-कमा लिया |कुछ नहीं बचा है अब इनमें |वैसे भी बापू अब कुलीन बैठकों की शोभा और सरकारी दफ्तरों की डिस्टेंपर उखड़ी दीवारों पर टाँगने-भर की वस्तु बन कर रह गए हैं |गांधी अब लोगों के दिलों में नहीं, इन्हीं बैठकों में बसते हैं |इन्हीं कुलीन बैठकों में बापू के संग बिताए गए पलों की गौरवगाथा सुनाई जाती है |वो जमाना गया जब गांधी के विचारों को जन-जन तक पहुंचाने के लिए प्रभात फेरियाँ निकाली जाती थीं |"

इतना ही नहीं अपना नाम कमाने के लिए यह कई तरह की संगोष्ठियाँ आयोजन करते हैं |इनके षड्यंत्रों का शिकार यदि कोई हुआ है तो वह है पहले से शोषित हुई जनता |इन्हें तो इस बात से कोई फर्क नहीं पड़ता कि कहीं किसी की भावनाओं को ठेस तो नहीं पहुँच रही |वह अपने स्वार्थ के लिए ऐसे व्यक्तियों को भली का बकरा

बनाते हैं जो समाज में शोषित/पीड़ित तथा प्रताड़ित हैं "और अगर इसमें भँवरी देवी, सुल्ताना शेख, मुशरत जहाँ, रुखसाना कौसर, संपत पाल, इरोम शर्मीला शानू को आमंत्रित करें और वे आ जाएँ, तो मैम मजा आ जाएगा |" यह सारी औरतें किसी न किसी प्रकार से समाज द्वारा शोषित हो चुकी हैं, जैसे- भँवरी देवी और सुल्ताना शेख के साथ हुए गैंगरेप और मुशरत जहाँ जिसकी बहन की मुंबई में फर्जी मुठभेड़ में हत्या कर दी गयी थी, आदि | समाज में इन औरतों को जहाँ सांत्वना दी जानी चाहिए थी वहीँ यह NGO's चलाने वाले अपने धंधे को सुद्रढ़ बनाने के लिए इन से सहानुभूति का ढ़ोंग रचाकर अपने कार्य को सफल बनाने में जुटे हैं | इस प्रकार यह उपन्यास NGO चलाने वाले उन घटिया लोगों की घटिया मानसिकता को दर्शाता है जो हमारे देश के महान राजनीतिज्ञों की छवि को आज़ादी के 70 साल बाद भी कलंकित करने का कोई अवसर नही छोड़ते | महात्मा गाँधी जैसे अहिंसावादी व्यक्ति के नाम पर विदेशों से भीख मांगते इन्हें शर्म नही आती, आएगी भी क्यों यही कर के तो इनके घर संग मरमर के बने है – "कबीर और उसकी पत्नी सानिया देश – विदेश से लाखों – करोड़ों रूपये का अनुदान प्राप्त करते है | उनका महलनुमा निवास स्थान है | परन्तु उन्होंने उसका नामकरण किया है _ कबीर सानिया कुटीर | इसमें कीमती इटालियन पत्थर से बने फर्श हैं, दुर्लभ कांस्य प्रतिमाएं हैं, दीवार पर विशाल पेंटिंगज है, जिन्हें देख कर लगता है मानो किसी स्वप्नलोक में आ गये हो"| कबीर और सानिया की तरह इस उपन्यास के अन्य पात्र जैसे सरला बजाज , टीना डालमिया, डॉ.वंदना राव, सुमन भारती, अमीना खान आदि अपने अपने तरीकों से यह धंधा करते है अर्थात NGO's चलाकर अपने बैंक एवं तिजोरियां भरने में दिन रात लगे रहते है | कबीर के माध्यम से मोरवाल जी इस

रहस्य से पाठक को अवगत कराते हैं कि इन NGO's की सबसे बड़ी खासियत है- लोगों को ठगना, इत्यादि "अनैतिकता, मक्कारी और संवेदनहीनता इस दुनिया में आने की पहली योग्यता है | जो इनमें जितना योग्य होगा, वह उतना ही सफल होगा |" अर्थात् NGO's में आने का अर्थ है किसी से कोई भी, किसी भी तरह की संवेदना न रखें और यदि कभी इसकी ज़रुरत पड़े तो कोरी संवेदना दर्शाकर उन व्यक्तियों का दिल जीतो, यही बड़ी कामयाबी होगी | जिस प्रकार सबाल्टर्ब इतिहासकारों ने अमेरिका में बैठकर इस देश के दलितों और उपेक्षितों के प्रति जूठी चिंता जताते हुए यहाँ की भोली भाली जनता को अपने वश में कर दिया, जिनके लिए वह अब देवता बन चुके हैं और अब उन्हें अपना लीडर भी मानते हैं |

इन NGO's को चलाने वालों की प्रमुखता यह है कि वह अपने कुतर्कों से सामने वाले को पराजित कर देते हैं, साथ ही अपनी बात मनवाने के लिए यह कोई भी पाखण्ड रच सकते हैं | "अगर सरकार आपकी बात मान लें, तब भी अंत तक अपनी असहमति जताते हुए उसे आसानी से स्वीकार मत करो | आखिर यही तो एक हुनर है जिसके बल पर सरकार पर दबाव बनाते हुए अपनी एक समांतर सत्ता कायम की जा सकती है | सानिया जी, मुनाफे की इस दूकान को निरंतर चलाए रखने के लिए जो ज़रूरी शर्तें हैं उनमें असहमति और हठ प्रमुख हैं |"

यह एनजीओज़ कोई ऐसी वैसी संस्था नहीं है बल्कि यूँ कहा जा सकता है कि यह गरीब मुल्क की नई दुकानें हैं अर्थात् मल्टीब्राण्ड दुकानें हैं जिसमें ज़रुरत और मौके के मुताबिक़ सामान रखा जाता है | अत: कहा जा सकता है कि समाज में किस चीज़ को लेकर जनता परेशान है, व्यथित है, उन्हें हथ्यार बनाकर वह अपने मिशन को सफलतापूर्वक शिखर पर ले जाते हैं और किसी को कानों-कान इसकी

बनक तक नहीं लगती | इसी का एक उदाहरण 'नरक मसीहा' उपन्यास में भी देखने को मिलता है जब आदिवासियों तथा दलितों से उनकी ज़मीनें हथयाई जा रही थीं और उनकी इसी परेशानी को अपना हथयार बनाकर कबीर उनके बीच जाकर जूठी संवेदना दर्शाता है और जनाधिकार सत्याग्रह की घोषणा करता है जिससे लोगों को लगता है कि कबीर उनके अधिकारों के लिए सरकार के विरुद्ध जाकर उनके साथ खडा है परन्तु कुछ समय पश्चात आन्दोलन को बीच में ही स्थगित करना पड़ता है क्यों करना पड़ा इसके प्रति किसी का भी ध्यान आकर्षित नहीं हुआ | वास्तव में स्थगित करने का मुख्य कारण था कबीर का जनाधिकार सत्याग्रह के पीछे के उद्देश्य जो सरकार द्वारा पूर्ण हो गया अर्थात् कबीर को राष्ट्रीय सलाहकार परिषद् का सदस्य बनाने का लालच दिखाया गया और उसका यह बाण सीधा निशाने पर जा लगा | वह जो चाहता था वही हुआ, लोगों के बीच अपनी छवि को भी बनाए रखा और अपना कार्य भी निकल गया |

भारत देश की अधिकतम आबादी किसानों/ मजदूर वर्ग की है, जो अपनी आजीविका खेती-बाड़ी, मज़दूरी आदि से चलाते हैं, परन्तु कभी कभार दुर्भाग्यवश प्राकृतिक आपदा के कारण इनकी फसलें नष्ट हो जाती हैं, जिसके परिणामस्वरूप वह अपने परिवार को पूरे साल खिलाने-पिलाने में असमर्थ हो जाते हैं | कभी कभार तो कई लोगों ने आत्महत्या तक कर ली और इसी परिस्थिति का फायदा यह एनजीओज़ वाले उठाते हैं | वह इन गरीब, असहाय लोगों को फांसने का कार्य अच्छे से जानते हैं और इन्हीं में कबीर जैसा व्यक्ति भी शामिल है जो मौका पाते ही अपना फायदा उठाने में देरी नहीं करता | वह माइक्रो फाइनांस नामक एक NGO खोलता है जिसमे वे गरीबों को छोटा मोटा कर्ज़ देना चाहता है, जिससे वह गरीब साल के बाकी दिन अच्छे से तथा बिना

कष्ठ के बिता सकें परन्तु इस उपकार के पीछे उसकी अपनी मंशा यह है कि वह कर्ज़ा देगा परंतु उसके लिए इन लोगों को अपनी ज़मीनें गिरवी रखनी होंगी | यह बात किसी से नहीं छिपी है कि भारत देश में यह कोई नई बात नहीं कि जब किसान एक बार कर्ज़ा लेता है तो आजीवन वह उस कर्ज़े को नहीं चुका पाता जिसके फलस्वरूप वह अपनी ज़मीन से हाथ धो बैठता है | उसका एकमात्र जीवित रहने का साधन उससे छिन जाता है | जब सानिया कबीर से इस माइक्रो फाइनान्स के बारे में जानना चाहती है तो कबीर इस रहस्य से पर्दा उठाता है कि-"भारत जैसे गरीब मुल्कों की ग़रीबी मिटाने की एक नई टकसाल है | एक ऐसी टकसाल जिससे दुनिया-भर के एनजीओ दोनों हाथों से नोट उलीच रहे हैं | अगर इसमें कामयाबी मिल गई, तो समझो सारे पाप धुल जाएँगे |"

यह एनजीओज़ अब जनकल्याण के लिए नहीं अपितु स्वयंकल्याण बन कर रह गए हैं | इन NGO's की अब यह धारणा प्रचलित हो चुकी है कि ये पूँजीपतियों के दलाल बनकर रह गए हैं | यह किसी उपयोगी वस्तु का उत्पादन नहीं करते बल्कि बाकी देशों के लिए सेवाएँ उपलब्द कराते हैं | इतना ही नहीं अपने नीजी स्वार्थ के लिए अपने देश की गरीबी का सौदा करते हुए इन्हें शर्म आना तो दूर वह हिचकिचाते तक नहीं | इस दुनिया में सब को पैसे कमाने की लालसा है, हर कोई एक-दूसरे से ज़्यादा कमाना चाहता है | इस नरक की दुनिया में आगे बढ़ने में इनका सबसे बड़ा सहायक है 'पॉवर प्वाइंट प्रेजेंटेशन' जिसके माध्यम से यह आगे जाकर अपने पैसों को हलाल दिखाते हैं | "इन नरक मसीहाओं की कामयाबी की एक बड़ी ताकत है यह प्रेजेंटेशन | सफलता की गढ़ी हुई कहानियाँ और झूठे आँकड़े इस अनौपचारिक प्रस्तुति के सबसे बड़े हथियार हैं |"

'नरक मसीहा' ऐसे मसीहाओं की खुली दास्तान है जो सम्प्रति गैर सरकारी संगठनों की स्थापना कर देश विदेश से अनुदान के नाम पर धन बटोरने और धन से पद –प्रतिष्ठा और अपार संपत्ति प्राप्त करने की मानसिकता रखते है | भगवानदास मोरवाल जी ने 5 वर्ष तक इस समस्या पर विशेष रूप से अवलोकन कर इस परिणाम तक पहुंचे है कि "जनकल्याण के लिए मिलनेवाली अनुदान या सहायता राशि का 95% जनकल्याण की योजना पर एवं 5% संगठन के कार्यालयी खर्च के लिए व्यवस्था थी परन्तु संगठनों ने फर्जी बिल बनाकर अधिकाँश धन हड़प लिया और यह यह साज़िश के रूप में हुआ"|

अतः इस उपन्यास का ताना बाना गैर सरकारी संगठनों की भीतरी दुनिया के इर्द गिर्द बुना गया है जो देश के दरिद्र लोगों के प्रति बनावटी संवेदना दर्शाकर धन एकत्रित करते है | इस उपन्यास में स्वतंत्रता के पश्चात जो लोगों की मानसिकता में परिवर्तन हुआ है उसकी ओर भी संकेत किया गया है , जो लोग सवतंत्रता की लड़ाई में आगे-आगे थे वही लोग स्वतंत्रता प्राप्ति के पश्चात लुटेरे बन गये है, जहाँ जिस पद पर वह लूट – खसूट कर रहे है , और जोड़ तोड़ के माध्यम से लाखों करोड़ों रूपये हड़प लिए जाते है | उन्हें किसी भी तरह की गलानि नहीं होती, वह निर्लज्ज हो चुके हैं | हर कोई भ्रष्टाचार के तवे पर रोटी सेंकने को तत्पर है, जहाँ उन्हें अपनी तिजोरियाँ बरी हुई नज़र आती है और अपनी सफलता इसी में समझते हैं |

उपन्यास की समीक्षा करते हुए सत्यकाम ने लिखा है "औपन्यासिक कृति नरक मसीहा में कथाकार सामाजिक आन्दोलनों की छद्दम दुनिया हमारे सामने पेश करते हुए उनके किरदारों और कृत्यों से हमारा परिचय कराता है | यह दुनिया एनजीओ की अनसुनी और अनकही कहानियों से पैबस्त है जिनमें तथाकथित सामाजिक

आन्दोलनों के गर्भग्रह में क्रियाशील दुष्ट मानसिकता और टुच्चेपन की अँधेरी कंदराओं का रोचक रहस्योद्घाटन किया है"

अंततः गैर सरकारी संगठनों की लम्भी फहरिस्त जैसे _ राहत फाउंडेशन , इंडिया इंटरनेशनल सेंटर , अखिल भारतीय अबला मंच , सर्वोदय कल्याण सभा , हार्मनी फॉर गोल्डन फाउंडेशन , इत्यादि जिनके नामों की गिनती करना असंभव सा प्रतीत होता है भगवानदास मोरवाल जी ने इनका अवलोकन कर के ही इस विशाल उपन्यास की रचना की है और ऐसा आज के ज़माने में असंभव सा प्रतीत होता है | यहाँ यह कहना अनुचित न होगा कि भगवानदास मोरवाल किसी सच्चे मसीहा से कम नहीं हैं जो सदेव ही समाज को एक से बढ़कर एक रचनाएँ दे रहे हैं और हमारे साहित्य को ऐसे ही लेखकों की अत्यंत आवश्यकता हैं |